VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

SOCIOLINGUISTIC ANALYSIS OF LITERATURE IN SPECIAL CONTEXT OF PHANISWARNATH RENU'S FICTION *PARATI PARIKATHA*

https://doi.org/10.5281/zenodo.7393611

Dr **Krishna Kumar Paswan**
Assistant Professor
Department of Hindi
RCS College Manjhaul, Begusarai
LNM University Darbhanga
Email : krishnasoni.bhu@gmail.com
Mobile : +918639321968

ABSTRACT

Literature is a key to establish a clear understand about the cultural identities, socio-political states and sprit of a society. This is a live document of human emotion and relation which is exhibited through the language. Only through the language human can express any thought, idea, feelings etc. An author also chose this way to create a world in their creation. In Hindi fiction writing, Phanishwarnath Renu is an author who brings the identity of regionalism in Hindi literature. This identity becomes possible only with the prospective of sociolinguistics. Renu's all fictions have special linguistic feature among all Hindi fictions. The main properties are to create special identities of all character through the language and linguistic behavior. These properties are the main element of sociolinguistics tool like speech community, multilingualism, sociolact, idiolect, etc. In Renu's Parati Parikatha these all feature are exist with special properties. So the main objective of this paper is to make a path of sociolinguistic analysis of literature to analyses of identity based literature.

Keywords : *literature, sociolinguistics, speech community, multilingualism, sociolact, idiolect.*

हिंदी साहित्य में फनीश्वरनाथ रेणु का विशिष्ट स्थान है |इन्होंने अपने लेखन के माध्यम से आंचलिकता की अवधारण को स्पष्ट किया एवं हिंदी में स्थानीयता एवं स्थानीय संस्कृति को वैश्विक फलक पर स्थापित किया |इनका उपन्यास *परती परिकथा* इस अवधारण का अन्यतम उदहारण है |इनके उपन्यास की भाषा अपने समय की सीमा को लांघते हुए समजभाषाविज्ञान की संकल्पना को अपने में आत्मसात करता है |समाजभाषाविज्ञान की प्रमुख विशेषता भाषायी समाज ,बहुभाषिकता ,व्याक्तिबोली ,समजबोली ,इत्यादि का सफल चित्रण हुआ है|

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

परती : परिकथा में चित्रित भाषायी समाज

'परती :परिकथा' कथ्य, शिल्य और भाषा की दृष्टि से सर्वोत् कृष्ट उपन् यास है। इसकी कथावस् तुका केन् द्रपूर्णिया जिले का परानपुर गाँव है। लेखक ने इस गाँव के माध् यम से पूरे देश की कथा कहने का प्रयास किया है एवं तत् कालीन सामाजिक राजनैतिक परिदृश् य को हमारे सामने लाने का प्रयास किया है। प्रारंभ में लेखक ने परानपुर गाँव के समाज के बारे में लिखा है-

"परानपुर ही नहीं सभी गाँव टूट रहे हैं। गाँव के परिवार टूट रहे हैं, व् यक्ति टूट रहा है– रोज-रोज, काँच के बर्तन की तरह।..... नहीं।.... निर्माण भी हो रहा है।..... नया गाँव, नए परिवार और नए लोग।"[i]

'रेणु' ने जिस गाँव ,परिवार और व्यक्ति के टूटने की बात कही है वह भारत का परम्परागत मध्यकालीन गाँव ,परिवार और व्यक्ति है ,पर जिस गाँव के निर्माण की बात कही है ,वह आज का विश् वग्राम है,वह परिवार आज का एकल परिवार है,और वे लोग आज के विज्ञान और तकनीक से युक् तमानव हैं, जो एक साथ लोकल भी हैं और ग् लोबल भी। जो एक साथ कई ज्ञान-विज्ञान की धाराओं को अपने में समेटे हुए बहुभाषिक लोग हैं। 'रेणु' का समाज आज से साठ साल पहले का समाज है। यह वह दौर है जब जमाना बहुत तेजी से बदल रहा था। यह बदलाव व्यक्ति को समाज ,संस्कृति और भाषा,कई स्तरों पर बदल रहा था। मनुष्यका नई भाषाओं ,समाजों और सांस्कृतियों से परिचय हो रहा था।'परती : परिकथा' में उपस्थित अनेक भाषायी समाज इसी कथन की सार्थकता को पुष् टकरते हैं।

'मैला आँचल' की तरह ही' परती : परिकथा 'में भी कुछ पात्र इसी गाँव के हैं और कुछ बाहर से आए हैं। इनमें से प्राय :सभी इस गाँव एवं जिले की भाषा बोलते हैं पर कुछ पात्र प्रदेश और दुनियाँ के अन् यभागों से भी आए हैं जिनकी भाषा यहाँ के लोगों से भिन् नहै। पर बहुत दिनों तक एक साथ रहने के कारण एक दूसरे की भाषा को कामचलाऊ ढंग से बोल लेते हैं और समझते भी हैं। इस वजह से इस उपन् यास में भी खड़ी बोली हिंदी के अलावाअन्य कई भाषायी समाजों का चित्रण मिलता है।

नेपाली भाषायी समाज

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

उपन्यास में कई जगह नेपाल का संदर्भ आया है। कई नेपाली पात्रों की व्यथा कथा एवं जीवन को अभिव्यक्त किया गया हैजिसे रचनाकार ने उनकी अपनी भाषा में अभिव्यक्ति की छूट दी है।

जितेन्द्रनाथ: *"दिलबहादुर! चिया दियेर आलि राम पखारन सिंध लाय बुलाउत ss । च्छे।*

दिलबहादुर : *"पानी मा भ्याते हेरेर काँऊ – काँऊ कराउँ छ मीत! मात s छक्कनें!"*

उपर्युक्त कथन नेपाली भाषा में हैं। लेखक ने अत्यंत स्वाभाविक ढंग से इसका प्रयोग किया है। पहला कथन जितेन्द्रनाथ का है। इसमें जितेन्द्रनाथ दिलबहादुर से चाय देने के बाद राम रखारन सिंह को बुलाने को कहते हैं। लेखक ने उपन्यास में लिखा है कि जितेन्द्र दिलबहादुर से नेपाली में ही बात करतेहैं।

बाँगला भाषायी समाज

उपन्यास में कहीं भी सीधे-सीधे किसी भी बंगाली पात्र का जिक्र नहीं किया गया है परंतु कुछ पात्र हैं जो बाँगला में बात करते हैं या भावावेश के क्षण में बाँगला का प्रयोग करते हैं।

ताजमनी : *"ओ माँ! माँ गो – ओ – ओ- !"*

गोविन्दो: *"फूल फूटिलो रे राँगा...... ओ गो..... फूल फूटिलो रे जवाँ..... फूटिलो रे!"*

डॉ .सी.के.राय चौधरी : "आमार चोख बुझी कॉटा?

आखे कुटी नहीं।

तुमी पारबे! तुमी पारबे! तुमी जे निजेइ एक बिरल वनस्पति!"

ऊपर के कथनों में ताजमीन के कथन को छोड़, शेष जितने भी कथन हैं उसके वक्ता बांगला भाषायी समाज के हैं।

मैथिली भाषायी समाज

चूँकि उपन्यास का कथानक ही मैथिली ओर अंगिका से मिश्रित भाषायी क्षेत्र है इसलिए उपन्यास में इसभाषायी समाज का होना स्वाभाविक है। पंरतु बहुत कम पात्र ऐसे हैं जो अपने पूरे वाक्य मैथिली में बोलते हैं। सभीके वाक्य हिंदी के हैं जिस पर अंगिका या मैथिली का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

रोजउड : *"अहाँ बड़ सुन्द्रड छि:"*

जिवछी नैरी :*"मा तकिन्नि, दुल् हबाबू आविगेल! लाउ हमर इलाम बकसिस, हमर बात ठीक भेल।"*

पूरे उपन् यास में यही दो कथन हैं जिसे हम पूर्णत :मैथिली का कह सकते हैं।इसमें जिवछी नोरी का वाक् यमैथिली भाषायी समाज का बेजोड़ नमूना है।

अंगिका भाषायी समाज

गंगाबाई : *"देखबो कोयली तोहर अंडा। खूब सेबो अंडा।"*

दंता राक्षस: *"भोर में फेर देखिवो सुन् नरी कन्ना।"*

मलारी : *"बप् पा-आ – आ हो! बप् पा"*

पंच : *"तोहर सब दोख माफ। देव कुमार दुल् हामिले सुन् दरी नैका को।"*

उपर्युक् तकथनों में गंगाबाई और दंता राक्षस का कथन और कथन-शैली दोनों अंगिका के हैं। पंच के कथन में अंगिका की शैली दिखाई पड़ती है परंतु वाक् यसंरचना हिंदी की है। फिर भी कह सकते हैं कि ये पात्र उपन् यास में अंगिका भाषायी समाज का प्रतिनिधित् वकरते हैं।

भोजपुरी भाषायी समाज

उपन् यास में सिर्फ एक पात्र रामपखारन सिंह के कई संवाद भोजपुरी में हैं। एक जगह रोजउड की माँ का एक वाक् यभोजपुरी में है। परंतु रेाजउड की माँसिपाही से भोजपुरी सीख रही है। वह मूलत :अंग्रेजी भाषायी समाज की है।

रामपखारन सिंह :*"परती में का होगा बौवा जी....... एहि बात तो हमहूँ...... ।"*

रोजउड की माँ : *"का हो? का बात हऽ:"*

इस उपन् यास में रामपखारन सिंह भोजपुरी भाषायी समाज का प्रतिनिधित् वकरता है। इसके जितने भी संवाद हैं उसमें भोजपुरीपन स्पष् टपरिलक्षित होता है।

मगही भाषायी समाज

हिंदी साहित्य में 'रेणु'की सबसे बड़ी ख़ासियत यह है कि ये अपने भाषा प्रयोग के माध्यम से पात्र और परिवेश का जीवंत चित्रण करने में सक्षम हैं। परती: परिकथा में जब हजारीबाग और दामोदर घाटी का प्रसंग आता है,तब वहाँ के एक क्षेत्रीय पात्र का भी वर्णन

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

किया गया है। वह जितेन् द्रकी गाड़ी में कुछ दूरीकी यात्रा करता है। उतरते वक़्तजब उसके द्वारा किराया देने पर जितेन् द्रलौटा देता है तो आशीर्वाद मगही भाषा में देता है–

बूढ़ा आदमी : "*कत् तेनखा मिलै हकौ! तोहर तनखवा बढ़तउ! तोहर......*''

बूढ़े आदमी का यह संवाद मगही जैसा है। मगही के बहुत से रूप बिहार के विभिन् न क्षेत्रों में बोले जाते हैं।

अंग्रेजी भाषायी समाज

'परती :परि कथा' की लगभग आधी कथा जितेन् द्रकी सौतेली माँ मिस रोजउड) गीता (की डायरी और घटनाओं से जुड़ी है। कहानी का काल और परिवेश उस समय का है जब पूर्णिया जिले में रह रहे बहुत से अंग्रेज अपना व् यवसाय और जमींदारी करते थे। इस कारण उपन् यास में लगभग डेढ़ दर्जन अंग्रेजी भाषायी समाज के सदस् यदिखाई पड़ते हैं। कुछ भारतीय भी हैं जो आवश् यकतानुकूल कई जगह अंग्रेजी में ही संवाद स् थापित करते दिखाई पड़ते हैं।

भिम् मलमामा : "*गॉड सेव पंडित नेहरू.... दे'ल सेव दि लांग एंड ग्रीन प्रेस्टिज ऑव दि रुलिंग*

पार्टी, क् लेमली''

रोजउड की सहेली :"*टेक केयर ऑफ हिज रिबूज*''

पुतली: "*झूमर! झूमर! हाउ यू सिंग झूमरछोटी मेम? वेरी गुड।*"

मि. ब् लैकस् टॉन : "*दैट सिवेइ्। मिस् टर मोस् टबॅडमास ब्राह्मीन नोटोरियस, दी ब्राह्मीन क्रिमिनल ही'ज..... ।*"

हीरा मंडल: "*भेरी भेरी बैड मैन। ओल् ड ईस् टेटदुश् मन*''

शिवेन् द्रमिश्र : "*आई एम पंडित शिवेन् द्रमिश्र ....पत् नीदार ऑफ परानपुर स् टेट। वेरी क् लोज टू योर जमींदारी लैंड।*"

परतीः परिकथा में अभिव्यक्त बहुभाषिकता

'परतीः परिकथा 'की पृष्ठभूमि वही है जो मैंला आँचल की है। भाषा की दृष्टि से देखा जाय तो यहाँ 'मैला आँचल' की तुलना में ज्यादा वैविध्यपूर्ण और परिमार्जित भाषा का प्रयोग हुआ है। यहाँ की बहुभाषिकता अत्यंत स्पष्ट और सुलझी हुयी है। इस उपन्यास में भी हिंदी ,

बांगला, मैथिली ,अंग्रेजी ,भोजपुरी ,नेपाली ,मगही आदि भाषायी समाज को अभिव्यक्ति मिली है। यहाँ का समाज भी हाई डेंसिटी सोशल नेटवर्क के तहत जुड़ा है। इसलिए प्रत्येक भाषायी समाज का सदस्य एक दूसरे की भाषा को समझता है। इसके अनेक उदाहरण पूरे उपन्यास में बिखरे पड़े हैं। इसकी पुष्टि के लिए कुछ संवादों को देखा जा सकता है।

"**सुरपति राय**: *आप क्यों तकलीफ......*

जितेन्द्र: *बैठिए। आपने रात में मेरी चाय की तारीफ की है ,सुना। इसलिए ,अभी आपको एक स्पेशल टी देने आ गया।..........रात में आपकी छींक सुन रहा था। गलती हुई ,रात में ही आपको गार्गल के लिए गर्म पानी भेज देना उचित होता। खैर, यह स्पेशल टी है। रॉ टी में लेमन है ,पाल्युड्रिन है और एक चम्मच रम है। जून की सरदी मैलेरिया की आगमनी समझी जाती है।.....वर्षा में कहीं भीगना पड़ा है। है न?...आइ नो! ......बाइ द वे आप वैष्णव तो नहीं?*

सुरपति राय.. *:जी नहीं ,मैं मैथिल ब्रहमण......... /............... /*

जितेन्द्रनाथ: *दिलबहादुर! चिया दियेर अलि रामपखारन सिंधलाय बुलाउ तss च् छौं।*

दिलबहादुर : *होस! होस!"*

ऊपर के वार्तालापों में जितेन् द्रनाथ के संवादों को देखा जाए तो इसमें कई परतें दिखाई पड़ती हैं। सुरपति राय एक शोधार्थी है। उसकी भाषा हिंदी है। उपन् यास में कहीं-कहीं इनकी भाषा में अंग्रेजी शब् दों का भी प्रयोग दिखायी पड़ता है। इस वार्तालाप में सबसे ज् यादा विकल् प जितेन् द्रनाथ की भाषामें दिखाई पड़ता है। "**डॉ .राय चौधुरी** *:दुलारी दाय नॅदी में गेहूँ का खेती होता है?"*

जितेन् द्रनाथ *:आमार चोख बुझि कॅटा।*

डॉ .राय चौधुरी *:नेहीं हॅम क् या देखता है, सो बाद में बोलेगा।..... तुमी पारबे! तुमीपारबे! तुमी जे निजेई एक बिरल वनस् पति!"*

इस उद्धरण में जितेनद्रनाथ और डॉ .राय चौधुरी दोनों हिंदी और बांगला भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। हाँ, यहाँ भी डॉ .राय चौधुरी ने वनस् पति में 'व' का प्रयोग किया है जो बांगला भाषायी के लिए सटीक नहीं है। इन उद्धरणों के आधार पर कह सकते हैं कि डॉ .राय चौधुरी की हिंदी में बांगला भाषायी समुदाय के सदस् यों की भाषा की गंध आती है।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

'परती : परिकथा' में अभिव्यक्त व्यक्ति-बोली ,समाज-बोली और भाषा-विकल्पन

'परती : परिकथा'कलात्मकता की दृष्टि से जितना उत्कृष्ट उपन्यास है भाषायी अस्मिता की दृष्टि से उतना ही वैविध्यपूर्ण भी। शैली की दृष्टि से यह 'रेणु' के अन्य उपन्यासों से थोड़ा भिन्न है। इसकी कथा का लगभग एक चौथाई भाग पूर्व दीप्ति कथा है। कथा के इस अंश को एक पात्र के द्वारा अनुवाद के माध्यम से कहा गया है। *'मैला आँचल'*की अपेक्षा इसकी भाषा ज्यादा सुलझी हुई है या यों कहें की उसी का बदला हुआ या परिवर्धित रूप है। इसमें पात्रों कि संख्या लगभग *'मैला आँचल'*के बराबर ही है। व्यक्ति-बोली ,समाज-बोली और भाषा-विकल्पन की अभिव्यक्ति भी अन्य उपन्यासों की तुलना में ज्यादा स्पष्ट और सुलझी हुई है।

परती :परिकथा में लगभग आधे दर्जन पात्रों की भाषा को व्यक्ति-बोली की श्रेणी में रखा जा सकता है। इनमें भिम्मल मामा ,दिलबहादुर ,फेकनी की माय ,गोबिन्दो ,सुचितलाल मड़र ,मकबूल ,गेंदाबाई आदि की भाषा को देख सकते हैं। जैसा कि कहा जा चुका है कि 'रेणु' भाषा के माध्यम से पात्रों का चरित्र चित्रण करते हैं। उपन्यास में एक बार परिचय प्राप्त कर लेने के बाद इनपात्रोंके संवाद से ही पता चल जाता है कि यह किसकी भाषा हो सकती है। उदाहरण के लिए इनके कथनों को देख सकते हैं। यथा-:

भिम्मल मामा की भाषा

"नों...,नों होल्डिंग डॉग-ओ-सावजेवाह्व !अपनी काष्ठ पादुका को एक तिल भी आगे जाने नहीं दूँगा। लेट कायदे-आजम डिसाइड... । हाँ-हाँ !आई वांट पकिस्तान। मैं चाहता हूँ पाकिस्तान विदाउट एनी अडल्ट्रेशन एंड विद सम लिमिटेशन।[ii]*"*

दिलबहादुर की भाषा

"पलटन को काम छोड़ेर सब काम कर सकता। ..... पलटन छोड़ेर सब दस्ता में है।[iii]*"*

फेकनी की माय की भाषा

"आकि देखो !कल से ही समझा रही थी लड़कियों को कि गला फाड़कर मत गा। उधर बाभन-छतरी की बेटी पुतहुओं को देखो आकि ,सलीमा ठेठर की तरह डानस कर रही है। आकि देखो[iv]*"?*

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

सूचितलाल मड़र की भाषा

"सोंसलिंस? सोंसलिंस क् यूँ अँब हँम कौमलिंस कें साँथ रँहेंगे और कुँण् उदँखल कँरके दिंखलाँ देंगे!"

गोबिन्दो की भाषा

"गोबिन्दो को आर समझाने नेहिं होगा। वो हमारा बोंधू दाजू हो गिया है। मातरिक, तुम्हारा ऊपर भारी खफ्फा है, बहादुर! तुम होशियारी से रहना सिंघजी।"

पूरे उपन्यास में इन पात्रों की भाषा व्यक्ति-बोली का सटीक उदाहरण है। भिम्मलमामा के स्वभाव में फक्कड़पन और अक्खड़पन है। इसी वजह से इनके लगभग सभी संवाद,ऊपरउल्लिखित कथनों की तरह अंग्रेजी-हिंदी मिश्रित हैं। कहीं-कहींसंस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग किया गया है। इस तरह के संवादों का प्रयोग उपन्यास में कोई अन्य पात्र नहींकरता है। भिम्मल मामा कि भाषा की खासियत यह है कि इसमें शब्दों का पिष्टपेषण बलपूर्वक किया जाता है। ऊपर के वाक्य में प्रयुक्त **होल्डिंग डॉग-ओ-सावजेवाह्व** इसी तरह के प्रयोग हैं। ये प्रायः शब्दों को अपने अनुकूल गढ़ते है। इसमें ऐसे भी शब्द होते हैं जिसका कोई अर्थ नहीं होता है। **पेंटागन ,हेक्सागन ,डॉग-ओ-सावजेवाह्व**इसी तरह के प्रयोग हैं। भिम्मल मामा ऐसे शब्द गढ़ते हैं जिसका सामान्य संवाद से कोई सम्बन्ध नहीं होता या कहें कि सामान्य शब्दों को विशिष्ट बनाने की बलात् कोशिश करते हैं। **डेमोक्रेसी** के लिए **दिमाकृषि**का प्रयोग इसी तरह का प्रयास है। दिलबहादुर की भाषा में नेपाली के शब्दों का प्रयोग दिखाई पड़ता है। कहीं-कहीं इसके संवाद मानक-हिंदी में भी मिलतेहैं पर इसके**टोन** एक खास तरह का नेपालीपन लिए हुए है। यह टोन ही इसकी भाषा को अन्य पात्रों की भाषा से अलग करती है। उपन्यास में जितेन्द्रनाथ भी नेपाली का प्रयोग करतेहैं पर इसकी नेपाली दिलबहादुर की नेपाली से अलग है। दिलबहादुर कि भाषा को लेखक ने सभी जगह नेपलीपन से युक्त रखने का प्रयास किया है। भिम्मल मामा और दिलबहादुर के संवादों के और भी नमूने तीसरे और चौथे अध्याय में दिए गएहैं।

व्यक्ति-बोलीकी दृष्टि से फेकनी की माय और सुचितलाल मड़र की भाषा विशेष उल्लेखनीय है। लेखक ने पूरे उपन्यास में फेकनी की माय के लिए एक तकिया कलाम',*आकि*

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

देखो 'का प्रयोग किया है। इसके जहाँ भी कोइ संवाद आएहैंवे इस तकिया कलाम के साथ हैं। इस तरह के प्रयोग की वजह से फेकनी की माय को एक सिगनेचर लैंगुएज मिला है। इसी तरह सुचितलाल मड़र नाक से बोलता है। इसके सभी संवाद नेजलाईजड हैं। प्रत्येक ध्वनि में अनुनासिक ध्वनि ध्वनित होती है। लेखक द्वारा इस तरह का चित्रण किसी भीपात्र के भाषायी यथार्थ को चित्रित करता है।

गोबिन्दो जितेन्द्रनाथ का रसोईया है। यह बाँगलाभाषायी समुदाय का सदस्य है। पर पूरे उपन्यास में यह एक दो जगह ही बाँगला का प्रयोग करता है। अन्यत्र सम्प्रेषण के लिए हिंदी का व्यवहार करता है। पर इसकी अपनी भाषायी पहचान बनी रहे इसलिए लेखक ने इसकी भाषा को एक अलग शैली प्रदानकी है। इसके जितने भी कथन हैंउसे देख कर अनायास ही एक बंगाली का रेखाचित्र हमारे सामने खिंच जाता है। ऊपर इसके संवादों के जो नमूने दिये गयेहैं ;उपन्यास में वैसी भाषा का प्रयोग सिर्फ गोबिन्दो ही करता है। हालाँकि डॉक्टर राय चौधुरी भी बंगाली हैं पर इनके संवाद हिंदी ,बाँगला और अंग्रेजी के शब्दों का मिश्रण हैं। बाँगलापन का जो प्रभाव गोबिन्दो के संवादों में है वह डॉ० राय चौधुरी के संवादों में उतना नहींहै। अतः गोबिन्दो के भाषा प्रयोग की शैली को इसका अपना सिगनेचर लैंगुएज कह सकते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 'परती : परिकथा' में लेखक ने भाषा के माध्यम से चरित्र निर्माण का बेजोड़ मिसाल प्रस्तुत की है। आजादी के बाद भारत की सामाजिक संरचना किस तरह बदल रही थी उसे इन्होंने भाषायी-विकल्पन के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है। यहाँ भी *'मैला आँचल'*की तरह काँग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी की चर्चा की गयी है पर यहाँ दोनों कि भाषाओं में उतना अंतर नहीं दिखाई पड़ता,जितना वहाँ है। दोनों की भाषा में तोड़-जोड़ की राजनीति का असर और सत्ता पाने की लालसा दिखाई पड़ती है। व्यक्ति-बोली की दृष्टि से यह 'रेणु' के अन्य उपन्यासों की तुलना में ज्यादा सशक्त है। सामाजिक स्तर भेद को ध्यान में रखते हुए समाज-बोली और भाषा-विकल्पन को भी गंभीरता से उभारा गया है।

[i] परती परिकथा, फनीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.61

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

[ii]वही० : 73
[iii]वही० : 64
[iv]वही 195
[v]वही० : 65